इकाई 23 कृदन्त प्रकरण – कृत्य प्रक्रिया

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य

23.1 प्रस्तावना

23.2 प्रत्यय

23.3 सूत्र, वृत्ति, सूत्रार्थ, उदाहरण, व्याख्या और रूपसिद्धि (धातोः सूत्र से भक्ष्य सूत्र तक)

23.4 सारांश

23.5 शब्दावली

23.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

23.7 अभ्यास प्रश्न

23.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त शिक्षार्थी–

- धातोः सूत्र से लेकर कृत्य प्रकरण की समाप्ति तक के अध्ययन के माध्यम से सूत्र, सूत्रार्थ एवं उदाहरणों से परिचित हो सकेंगे।
- कृत्य प्रक्रिया के अन्तर्गत विहित प्रत्ययों का परिचय प्राप्त करेंगे।
- कृत् एवं कृत्य प्रत्ययों के अन्तर और संख्या को जान सकेंगे।
- कृत्य प्रत्ययों का विधान किन अर्थों में होता हैं? यह भी जान सकेंगे।
- साथ ही साथ उन प्रत्ययों की सहायता से निर्मित होने वाले पदों का ज्ञान तथा व्यवहार में इनका यथोचित प्रयोग करने में निपुणता प्राप्त कर सकेंगे।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी के पूर्व–कृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत आने वाले कृत्य–प्रत्ययों से सम्बन्धित प्रक्रिया (रूपसिद्धि) को समझ सकेंगे; तथा उन्हें
- उत्सर्ग–अपवाद नियम को और अच्छी प्रकार से समझने में सरलता होगी।

23.1 प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व हम लघुसिद्धान्तकौमुदी के संज्ञा, सन्धि, सुबन्त तथा तिङन्त (ण्यन्तादि प्रक्रिया सहित) आदि प्रकरणों का भली भाँति अध्ययन कर चुके हैं। इस इकाई सहित आगे

की कुल चार इकाईयों में हम कृदन्त प्रकरण (पूर्व–कृदन्त) का अध्ययन करेंगे। सबसे पहले इस इकाई में हम कृत्य प्रत्ययों की चर्चा करने जा रहे हैं। इस चर्चा के माध्यम से हम कृत्य–प्रत्ययों के स्वरूप, धातुओं से इनका विधान तथा धातु व कृत्य–प्रत्ययों के संयोग से निष्पन्न प्रातिपदिक और इन प्रातिपदिकों एवं सुबादि प्रत्यय के संयोग से सिद्ध होने वाले कृदन्त पदों से परिचित हो सकेंगे।

23.2 प्रत्यय

प्रत्यय एक संज्ञा है। पाणिनि ने 'प्रत्यय 3/1/6' एवं 'परश्च 3/1/2' इन दो अधिकार सूत्रों की व्याप्ति पञ्चम अध्याय की परिसमाप्ति (निष्प्रतिवाणिश्च 5/4/160) तक रखी है। अतः इन दोनों अधिकार सूत्रों की व्याप्ति के फलस्वरूप 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन् 3/2/5' से विहित 'सन्' से लेकर 'उरःप्रभृतिभ्यः कप् 5/4/151' (इस सूत्र में पठित कप् (एक प्रत्यय विशेष) 5/4/160 तक अन्वित होता है) से विहित 'कप्' तक की प्रत्यय संज्ञा होती है एवं 'परश्च 3/1/2' के अनुसार इन प्रत्ययों का विधान यथानिर्दिष्ट धातु अथवा प्रातिपदिक के बाद होता है।

लघुसिद्धान्तकौमुदी में वरदराजाचार्य ने कृदन्त प्रकरण को तिङन्त प्रकरण के बाद रखा है। संस्कृत भाषिक परम्परा में प्राप्त पदों (शब्दों) को व्याकरण की पद्धति के अनुसार दो प्रकार से विभक्त किया गया है – जिसे हम सुबन्त तथा तिङन्त के नाम से जानते हैं।

सुबन्त – सुप् एक प्रत्याहार है। इस प्रत्याहार के अन्तर्गत सु से लेकर सुप् तक आने वाले 21 प्रत्यय विद्यमान माने जाते हैं। ये सुबादि 21 प्रत्यय जिन प्रातिपदिकों के अन्त में प्रयुक्त होते हैं वे पद सुबन्त कहलाते हैं। ध्यातव्य है कि ये सुबादि प्रत्यय प्रातिपदिकों से विहित होते हैं।

तिङन्त – तिङ् एक प्रत्याहार है। इसमें तिप् से लेकर महिङ् तक 18 प्रत्यय परिगणित हैं। ये प्रत्यय धातुओं से विहित लकारों के स्थान पर होते हैं। ये तिङादि 18 प्रत्यय जिनके अन्त में हो वे पद तिङन्त कहलाते हैं। ये तिङादि प्रत्यय धातु से विहित होते हैं।

अब यहाँ हमें यह विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि धातु से विहित होने वाले प्रत्ययों के साथ ही कृत् प्रत्ययों का प्रयोग भी धातु से ही किया जाता है। अर्थात् धातु से विहित होने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं – 1. तिङ्, एवं 2. कृत्। जब धातु से तिङ् प्रत्यय का विधान होकर रूप बनता है तो वह साध्यमान क्रिया रूप कहलाता है तथा जब धातु से कृत् प्रत्यय विहित हो कर रूप बनता है तो वह सिद्ध क्रिया रूप कहलाता है।

वस्तुतः पाणिनीय व्याकरणिक परम्परा में कृत् प्रत्यय उन प्रत्ययों को कहा जाता हैं जिनकी कृदतिङ् 3/1/93 (अर्थात् धातु से विहित प्रत्ययों में तिङ् प्रत्ययों को छोड़कर शेष प्रत्ययों कृत् कहलाते हैं) से कृत्संज्ञा होती है। इन कृत्संज्ञक प्रत्ययों के अन्तर्गत ण्यत्, यत्, अण्, अच्, णमुल् आदि प्रत्यय आते हैं। इस प्रकार धातु से होने वाले प्रत्ययों में तिङ् प्रत्ययों के

अतिरिक्त अन्य सभी प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहे जाते हैं। धातुओं से कृत् प्रत्यय किए जाने पर बनने वाला शब्द कृदन्त कहलाता है और उसकी कृत्तद्धितसमासाश्च 1/2/46 से प्रातिपदिक संज्ञा हो जाती है। भाषा में बहुधा तिङन्त क्रिया–पदों के प्रयोग के विना ही तिङन्त के स्थान पर कृदन्त–पदों का क्रिया के रूप में प्रयोग करके भाषिक व्यवहार सम्पन्न किया जाता है। कृदन्तों का क्रिया के रूप में इस प्रकार के प्रयोग के उदाहरण संस्कृत–साहित्य में अनेकत्र तथा भूरिशः समुपलब्ध होते हैं।

सम्पूर्ण कृदन्त–प्रकरण को लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार चार भागों में विभक्त किया जा सकता है – कृत्य, पूर्वकृदन्त, उणादि और उत्तरकृदन्त। कृत् – प्रत्ययों (संज्ञा) के अन्तर्गत ही कुछ विशेष प्रत्ययों की कृत्य संज्ञा होती है। उन प्रत्ययों का प्रकरण होने के कारण इस प्रकरण को कृत्य प्रकरण कहा जाता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि धातु से तिङ् और कृत् प्रत्यय होते हैं । तिङ् प्रकरण का विधान पहले इसलिए किया गया क्योंकि कृत् प्रत्यय का ज्ञान तिङ् प्रत्यय ज्ञान का पश्चाद्भावी है, क्योंकि 'कृदतिङ्' की व्यवस्था के अनुसार तिङ् भिन्न प्रत्ययों की ही कृत्संज्ञा होती है। अतः कृदन्त प्रकरण से पहले तिङन्त प्रकरण का होना स्वाभाविक ही है।

धातुओं से होने वाले प्रत्ययों में सबसे विशाल भण्डार है कृत् प्रत्ययों का। अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय में कुल 631 सूत्र हैं, इन सूत्रों के द्वारा विभिन्न धातुओं से अनेक अर्थों में बहुत सारे प्रत्यय विहित किये गये हैं। ये सभी धातु से विहित हैं, केवल नामधातु प्रत्यय सुबन्त से विहित हैं। धातु से विहित प्रत्यय प्रायः सवा सौ हैं और प्रत्ययों के अर्थ भी प्रायः इतने ही हैं। इनमें यदि तिङ् और सनादि प्रत्ययों को पृथक् कर दें तो प्रायः 100 प्रत्यय और 100 ही अर्थ रह जाते हैं। इन्हीं को कृत् कहते हैं। यहां यह कोई ऐसा विभाग नहीं है कि जहां एक प्रत्यय के लिए एक ही अर्थ निश्चित हो। बहुधा एक प्रत्यय के अनेक अर्थ और एक अर्थ में अनेक प्रत्यय भी प्राप्त होते हैं। उदाहरण के रूप में – भाव अर्थ में घञ् (पाकः), अच् (जयः), अप् (करः), क्तिन् (नीतिः) आदि अनेक प्रत्यय और चानश् प्रत्यय के एकाधिक अर्थ ताच्छील्य (भोगं भुञ्जानः), वयोविशेष (कवचं बिभ्राणः), शक्ति (शत्रून् निघ्नानः) आदि समुपलब्ध होते हैं।

कृत्–प्रत्ययों का विधान साधारणतः कर्ता अर्थ में किया गया है। इन कृत् संज्ञक प्रत्ययों के अन्तर्गत ही कुछ विशेष प्रत्ययों की कृत्य संज्ञा भी की जाती है। इस प्रकार इन कृत्य प्रत्ययों की दो–दो संज्ञाएं होती हैं – कृत् और कृत्य। यद्यपि कृत् प्रत्यय मुख्यतः कर्ता अर्थ में विहित हैं लेकिन कृत्य प्रत्यय सदा कर्ता से भिन्न भाव और कर्म अर्थ में होते हैं। साथ ही ये कृत्य और ल्युट् बहुल प्रकार से होते हैं, अतः वे कर्म और भाव से भिन्न स्थलों में भी हो सकते हैं।

कृत्य प्रत्यय के अन्तर्गत कुल सात (7) प्रत्यय आते हैं : 'तव्य, तव्यत्, अनीयर, केलिमर, यत्, क्यप् और ण्यत्'।

23.3 सूत्र, वृत्ति, सूत्रार्थ, उदाहरण, व्याख्या और रूपसिद्धि (धातोः सूत्र से लेकर भक्ष्य सूत्र तक)

सूत्र – धातोः 3/1/91

वृत्ति – आ तृतीयाध्यायसमाप्तेर्ये प्रत्ययास्ते धातोः परे स्युः। कृदतिङ् इति कृत्सञ्ज्ञा।

सूत्रार्थ – अष्टाध्यायी के तृतीयाध्याय के समाप्ति पर्यन्त जो प्रत्यय कहे गये हैं, वे धातु से परे हों।

व्याख्या – यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र में धातोः यह एक मात्र पद है तथा यह पञ्चमी एकवचनान्त है।

यहाँ से लेकर अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय की समाप्ति पर्यन्त जिन प्रत्ययों का वर्णन किया गया है, वे धातु से परे होंगे। अर्थात् तृतीय अध्याय के प्रथम पाद के 91वें सूत्र से लेकर तृतीय अध्याय के चतुर्थ पाद के अन्तिम सूत्र तक जो भी प्रत्यय हों वे धातु के बाद ही हों, ऐसा यह अधिकार सूत्र करता है।

धातु से होने वाले प्रत्यय दो प्रकार के हैं – प्रथम तिङ् और द्वितीय कृत्। तिङ् प्रत्ययों के अन्तर्गत 18 प्रत्यय हैं। तिप्, तस्, झि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस्, ता, आताम्, झ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इड्, वहिङ् और महिङ्।

इनके अतिरिक्त धातु से होने वाले अन्य प्रत्ययों को कृदतिङ 3/1/93 इस सूत्र से तिङ् से भिन्न प्रत्ययों की कृत् संज्ञा होती है। अतः तिङ् के अतिरिक्त धातु से होने वाले प्रत्यय कृत् कहलाते हैं।

सूत्र – वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् 3/1/94

वृत्ति – अस्मिन् धात्वधिकारेऽसरूपोऽपवादप्रत्यय उत्सर्गस्य बाधको वा स्यात् स्त्र्यधिकारोक्तं विना।

सूत्रार्थ – इस धात्वधिकार में असरूप अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग का विकल्प से बाधक हो, स्त्र्यधिकार के प्रत्ययों को छोड़कर।

व्याख्या – यह परिभाषा सूत्र है। वा यह अव्यय पद है। असरूपः यह प्रथमा एकवचन का रूप है। अस्त्रियाम् यह सप्तमी एकवचन का रूप है।

इस धात्वधिकार में असमानरूप वाला अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग प्रत्यय का विकल्प से बाधक हो, परन्तु यह कार्य स्त्र्यधिकार के प्रत्ययों में लागू नहीं होता।

ध्यातव्य है कि पाणिनीय व्याकरण में सूत्र दो प्रकार के हैं; उत्सर्ग और अपवाद।

उत्सर्ग – जो सामान्य रूप से कार्य का विधान करते हैं, उन्हें उत्सर्ग कहते हैं।

अपवाद – जो विशेष रूप से कार्य करते हैं, उन्हें अपवाद कहते हैं।

व्याकरण शास्त्र का सामान्यतः नियम यह है कि उत्सर्ग का अपवाद नित्य बाधक होता है। यह नियम सर्वत्र लागू होता भी है। परन्तु यहाँ पर यह परिवर्तन हुआ कि अपवाद शास्त्र उत्सर्ग का विकल्प से बाधक होगा। अर्थात् एक बार उत्सर्ग शास्त्र की प्रवृत्ति होगी और दूसरी बार अपवाद शास्त्र की। परन्तु यह नियम असमानरूप वाले अपवाद शास्त्रों के साथ ही लागू होगा। अर्थात् इसमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि उत्सर्ग और अपवाद प्रत्ययों में समानता (एक जैसा) रूप नहीं होना चाहिए। क्योंकि उत्सर्ग और अपवाद में समानरूपता होने पर उत्सर्ग का अपवाद से नित्य बाध होकर केवल अपवाद शास्त्र की ही प्रवृत्ति होगी।

जैसे, धातोः के अधिकार में पढ़ा गया तव्यत् प्रत्यय उत्सर्ग शास्त्र से विहित है तथा यत् प्रत्यय उसका अपवाद है। तव्यत् प्रत्यय का शेष तव्य बचता है तथा यत् का शेष य रहता है। ये दोनों प्रत्यय असमानरूप (एक जैसा अर्थात् समान रूप नहीं हैं जिनका) वाले हैं, अतः एक ही धातु से तव्यत् तथा विकल्प से उसे बाध कर यत् प्रत्यय होता है। परन्तु यदि प्रत्यय समानरूप हो तो उत्सर्ग का अपवाद नित्य बाधक होता है। जैसे – यत् और ण्यत् इन दोनों प्रत्ययों में शेष य ही बचता है। अतः यह असमानरूप न हो कर समानरूप ही है। इसलिए यहाँ पर अचो यत् 3/197 सूत्र से विहित यत् का ऋहलोर्ण्यत् 3/2/124 इस सूत्र से होने वाला ण्यत् प्रत्यय नित्य बाधक होता है।

सूत्र – कृत्याः 3/1/95

वृत्ति – ण्वुल्तृचावित्यतः प्राक् कृत्यसंज्ञाः स्युः।

सूत्रार्थ – ण्वुल्तृचौ (3/1/133) से पहले तक कहे जाने वाले प्रत्यय कृत्य संज्ञक हों।

व्याख्या – यह संज्ञा अथवा अधिकार सूत्र है। कृत्याः यह प्रथमा बहुवचन का रूप है। ण्वुल्तृचौ 3/1/133) सूत्र से पहले जितने प्रत्यय कहे गये हैं, उनकी कृत्य संज्ञा होती है। इस प्रकार यह सूत्र कृत्य संज्ञा (कृत् संज्ञा के अन्तर्गत ही एक द्वितीय संज्ञा) के अधिकार का विधान करता है ।

कृत्य के अन्तर्गत सात प्रत्यय आते हैं। इन प्रकरण के सूत्रों के द्वारा 1. तव्यत्, 2. तव्य, 3. अनीयर् 4. यत्, 5. क्यप् और 6. ण्यत् प्रत्यय और वार्तिक के द्वारा 7. केलिमर प्रत्यय विहित होता है। इस प्रकार कृत्य प्रत्ययों की कुल संख्या 7 होती है। इन सात प्रत्ययों का एक कारिका में किया गया परिगणन अधोलिखित है :

तव्यञ्च तव्यतञ्ञ्चानीयरं केलिमरं तथा।
यतं ण्यतं क्यपं चौव सप्त कृत्यान् प्रचक्षते।।

सूत्र – कर्तरि कृत् 3/4/67

वृत्ति – कृत् प्रत्ययः कर्तरि स्यात्। इति प्राप्ते।

सूत्रार्थ – कृत् संज्ञक प्रत्यय कर्ता अर्थ में होते हैं।

व्याख्या – यह प्रत्यय के अर्थ का निर्धारण करने वाला विधि सूत्र है। कर्तरि यह सप्तमी एकवचन का रूप है। कृत् यह प्रथमा एकवचन का रूप है।

कृदन्त प्रकरण में जितने भी प्रत्यय होते हैं, वे सब किसी अर्थ विशेष को लेकर के ही होते हैं। अतः यहां यह ध्यातव्य रहे कि जो प्रत्यय जिस अर्थ में विहित होता है वह उस अर्थ का बोध कराता है। जैसे – कर्ता अर्थ में प्रत्यय होने का तात्पर्य है, कर्ता अर्थ का बोध कराना। सामान्यतः कृत् प्रत्यय कर्ता अर्थ में होता है यह व्यवस्था इस सूत्र से विहित होती है। कर्ता के अतिरिक्त जिन विशेष अर्थों में कृत् प्रत्यय होता है, उसका निर्देश अग्रिम सूत्रों में करेंगे।

सूत्र – तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः 3/4/70

वृत्ति– एते भावकर्मणोरेव स्युः।

सूत्रार्थ – कृत्यसंज्ञक प्रत्यय, क्त प्रत्यय तथा खलर्थ प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में ही होते हैं।

व्याख्या – यह प्रत्यय के अर्थ का निर्धारण करने वाला विधि सूत्र है। तयोः यह सप्तमी द्विवचन का रूप है। एव अव्यय पद है। कृत्यक्तखलर्थाः प्रथमा बहुवचन का पद है।

पूर्व सूत्र से कृत् प्रत्यय कर्ता अर्थ में विहित हो रहे हैं। कृत् संज्ञा के अन्तर्गत आने के कारण कृत्य प्रत्यय भी स्वाभाविक रूप से उसी कर्ता अर्थ में विहित हो रहे थे। इसके साथ ही पूर्व कृदन्त प्रकरण में आये हुये क्त तथा उत्तर कृदन्त प्रकरण में आये हुये खलर्थ प्रत्ययों का भी सामान्यतः कर्ता अर्थ में ही विधान प्राप्त था। यह सूत्र कृत्य प्रत्ययों (तव्यत् आदि), क्त और खलर्थ प्रत्ययों का कृत् संज्ञक होने के कारण सामान्यतः कर्ता अर्थ में प्राप्त विधान का बाध करके भाव और कर्म अर्थ में विहित होने का विशेष विधान करता है। खल् प्रत्यय जिस अर्थ में होता है, उसी अर्थ में होने वाले प्रत्ययों को खलर्थ प्रत्यय कहते हैं।

सूत्र – तव्यत्तव्यानीयरः 3/1/96

वृत्ति– धातोरेते प्रत्ययाः स्युः। भावे औत्सर्गिकमेकवचनं क्लीबत्वं च।

सूत्रार्थ – धातु से परे तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते हैं। भाववाच्य में प्रत्यय विहित होने के कारण स्वाभाविक एकवचन और नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण – एधितव्यम्, एधनीयं त्वया।

व्याख्या – यह प्रत्यय विधायक विधि सूत्र है। तव्यत्तव्यानीयरः यह प्रथमा बहुवचन का रूप है। तव्यत् और अनीयर् के अन्त्य हल् वर्ण त् और र का हलन्त्यम् 1/3/3 से इत् संज्ञा हो कर तस्य लोपः1/3/9 से इत् संज्ञक वर्ण का लोप हो जाता है। अतः तव्य एवं अनीय ही शेष रहते हैं। तव्यत् और तव्य में अन्तर केवल इतना ही है कि एक तव्य तित् है और दूसरा नहीं। तित् करने का फल तित्स्वरितम् सूत्र से स्वरित स्वर का विधान है। अनीयर् में रेफ इत्संज्ञक है। इन तीनों प्रत्ययों के शित् न होने के कारण इनकी आर्धधातुकसंज्ञा होगी। आर्धधातुक प्रत्यय वलादि हो और धातु अनिट् न हो तो उस वलादि प्रत्यय को आर्धधातुकस्येड् वलादेः सूत्र से इट् का आगम भी होगा।

तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः के विधान से तव्यत्, तव्य और अनीयर् ये अकर्मक धातु से भाव और कर्म अर्थ में हुए हैं। भाव अर्थ में स्वाभाविक रूप से नपुंसकलिंग और एकवचन ही होता है। धातु के अर्थ क्रिया मात्र को भाव कहते हैं। भाव न तो स्त्रीलिंग होता और न ही पुल्लिंग, अतः स्वाभाविक रूप से नपुंसकलिंग ही होगा। जिस क्रिया में कृत्य प्रत्यय लगा होगा है, उसका कर्ता अनुक्त होने के कारण तृतीया विभक्ति वाला हो जाता है।

रूपसिद्धि –

एधितव्यम् – अकर्मक एध (वृद्धौ) धातु के अनुनासिक अन्त्य अकार की इत् संज्ञा होकर शेष एध् से 'तव्यत्तव्यानीयरः' सूत्र से भाव अर्थ में तव्यत् अथवा तव्य प्रत्यय हुए। तव्यत् होने के पक्ष में तकार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत् संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप होकर एध्+तव्य बना। तव्य प्रत्यय तिङ् और शित् प्रत्यय से भिन्न धातु विहित प्रत्यय है अतः 'आर्धधातुकं शेषः' सूत्र से उसकी आर्धधातुक संज्ञा हुई। इस संज्ञा के फलस्वरूप 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से तव्य को इट् का आगम हुआ। इट् में अन्त्य टकार की इत् संज्ञा एवं लोप हुआ। शेष इकार के टित् होने के कारण 'आद्यन्तौ टकितौ' परिभाषा सूत्र की सहायता से तव्य प्रत्यय के आदि में बैठा। एध्+इ+तव्य इस स्थिति में वर्ण–सम्मेलन होकर एधितव्य बना। तव्य प्रत्यय कृत् प्रत्यय है, अतः एधितव्य यह शब्द कृदन्त हुआ। कृदन्त होने के कारण इसकी 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा हुई और प्रथमा एकवचन में सु विभक्ति आयी। तव्यत् प्रत्यय के भाव अर्थ में होने के कारण स्वाभाविक नपुंसकलिङ्ग होता है। एधितव्य्सु इस स्थिति में 'अतोऽम्' सूत्र से सु के स्थान पर अम् आदेश हो कर एधितव्य +अम् बना। इसके बाद 'अमि पूर्वः' सूत्र से अम् के आदि अकार तथा एधितव्य के अन्त्य अकार के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होकर एधितव्यम् इस रूप की सिद्धि हुई।

एधनीयम् – यहाँ पर भी एध् धातु से परे 'तव्यत्तव्यानीयरः' सूत्र से भाव अर्थ में अनीयर् प्रत्यय हुआ। अनीयर् का अन्त्य रकार इत् संज्ञक है। एध्+अनीय इस अवस्था में वर्ण–सम्मेलन करके कृदन्त होने के कारण प्रातिपदिक संज्ञा तथा भाव अर्थ में नपुंसकलिङ्ग एकवचन में सु प्रत्यय हो कर एधनीय +सु बना। इस स्थिति में 'अतोऽम्' सूत्र से सु के स्थान पर अम् आदेश हो कर एधनीय +अम् बना। इसके बाद 'अमि पूर्वः' सूत्र से अम् के आदि अकार तथा

एधनीय के अन्त्य अकार के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होकर एधनीयम् इस रूप की सिद्धि हुई।

वार्तिक – केलिमर उपसंख्यानम्।

अर्थ – धातु से केलिमर् प्रत्यय भी होता है

उदाहरण – पचेलिमा माषाः, भिदेलिमाः सरलाः।

व्याख्या – धातु से केलिमर् प्रत्यय भी होता है। अतः तव्यत्तव्यानीयरः इस सूत्र में केलिमर् प्रत्यय भी जोड़ना चाहिए। अर्थात् केलिमर् यह कृत्य प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में ही होता है।

पचेलिमाः – पच् धातु से परे 'केलिमर् उपसंख्यानम्' वार्तिक से केलिमर् प्रत्यय हुआ। पच्केलिमर् इस स्थिति में प्रत्ययस्थ अन्त्य रकार का अनुबन्ध लोप तथा आदि ककार की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत् संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' सूत्र से इत् संज्ञक ककार का लोप हो कर पच्+एलिम बना। वर्ण–सम्मेलन करके पचेलिम इस स्थिति में प्रातिपदिक संज्ञा तथा माषाः का विशेषण होने के कारण प्रथमा बहुवचन में जस् विभक्ति आई। विभक्ति सम्बन्धी अन्य कार्य होकर पचेलिमाः यह रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – कृत्यल्युटो बहुलम् 3/3/113

वृत्ति –क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।।

सूत्रार्थ – कृत्यसंज्ञक प्रत्यय और ल्युट् प्रत्यय बहुल से होते हैं।

उदाहरण – स्नात्यनेनेति स्नानीयं चूर्णम्। दीयतेऽस्मै दानीयो विप्रः।

व्याख्या – कृत्यल्युटः यह प्रथमा बहुवचन का पद है। बहुलम् प्रथमा एकवचन का पद है।

बहुल –

सूत्रों के विधान को भिन्न–भिन्न प्रकार वाला समझ कर वैयाकरण 'बहुल' के चार प्रकार कहते हैं : (1) कहीं प्रवृत्त हो जाना, (2) कहीं प्रवृत्त न होना, (3) कहीं विकल्प से प्रवृत्त होना, (4) और कहीं कुछ और ही हो जाना। कुछ और होने का तात्पर्य यह है कि निर्धारित योग्यता के अतिरिक्त भी कुछ और ही विधान होता है।

इन दोनों उदाहरणों में कृत्य संज्ञक अनीयर् प्रत्यय हुआ है। पहले यह बताया जा चुका है कि कृत्य प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में ही होते हैं। परन्तु कृत्यल्युटो बहुलम् सूत्र में बहुल का प्रयोग होने के कारण कृत्य प्रत्ययों का विधान अन्य अर्थों में भी सम्भव हो जाता है। इसी

कारण स्नानीयम् में अनीयर् करण अर्थ में हुआ तथा दानीयः में इस प्रत्यय का विधान सम्प्रदान अर्थ में हुआ है।

स्नानीयम् – स्ना धातु से 'तव्यत्तव्यानीयरः' सूत्र से भाव अथवा कर्म अर्थ में तव्यत्, तव्य एवं अनीयर् प्रत्यय प्राप्त थे जिन्हें बाध कर 'कृत्यल्युटो बहुलम्' सूत्र के बहुल का आश्रयण करके भाव एवं कर्म अर्थ से भिन्न करण अर्थ में अनीयर् प्रत्यय हुआ। स्ना+अनीयर् इस स्थिति में 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर स्नानीय बना। तत्पश्चात् प्रातिपदिक संज्ञा एवं स्वादि उत्पत्ति हुई। स्नानीय+सु इस स्थिति में विभक्ति सम्बन्धी अन्य कार्य होने से स्नानीयम् यह रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – अचो यत् 3/1/97

वृत्ति – अजन्ताद्धातोर्यत् स्यात्।

सूत्रार्थ – अजन्त धातु से यत् प्रत्यय होता है।

उदाहरण – चेयम्।

व्याख्या – यह प्रत्यय विधायक विधि सूत्र है। इस सूत्र में अचः पञ्चमी एकवचन का पद है। यत् यह प्रथमा एकवचन का पद है। यत् के अन्तिम हल् वर्ण तकार का भी इत् संज्ञा हो कर लोप हो जाता है। इस कार्य को संक्षेप में अनुबन्धलोप भी कहते है। यत् में शेष य ही बचता है। यह भाव और कर्म अर्थ में हुआ है। जिन धातुओं के अन्त में अच् प्रत्याहार में आने वाले वर्ण हों उन्हें अजन्त धातु कहते हैं।

चेयम् – चि धातु से परे 'अचो यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ। चि+यत् इस स्थिति में यत् प्रत्यय की तिङ् और शित् से भिन्न तथा धातु से विहित प्रत्यय होने के कारण 'आर्धधातुकं शेषः' सूत्र से आर्धधातुक संज्ञा हुई। आर्धधातुक प्रत्यय यत् के परे रहते 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से इगन्त अङ्ग चि के इकार के स्थान पर गुण अर्थात् एकार आदेश होकर चेयत् बना। यत् के अन्त्य तकार की इत् संज्ञा एवं अनुबन्ध लोप हो कर चेय बना। चेय यह कृदन्त है अतः कृदन्त होने के कारण 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा तथा नपुंसकलिङ्ग प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय हुआ। चेय +सु इस स्थिति में विभक्ति सम्बन्धी अन्य कार्य होकर चेयम् यह रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – ईद्यति 6/4/65

वृत्ति – यति परे आत ईत् स्यात्। देयम्।

सूत्रार्थ – यत् प्रत्यय परे रहते धातु के अन्त में विद्यमान आकार के स्थान पर ईकार होता है।

उदाहरण – ग्लेयम्।

व्याख्या – यह आदेश विधायक विधि सूत्र है। ईत् यह प्रथमा एकवचन का पद है। यति यह सप्तमी एकवचन का रूप है। ईत् में तपरकरण ईकार मात्र के ग्रहण के लिए किया गया है।

देयम् – आकारान्त दा धातु से परे 'अचो यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ। दा+यत् इस स्थिति में यत् के अन्त्य तकार का अनुबन्धलोप होकर दाय बना। 'ईद्यति' सूत्र से यत् प्रत्यय परे रहने पर दा धातु के आकार के स्थान पर ईकार आदेश हुआ। दी+य इस स्थिति में यत् प्रत्यय की आर्धधातुक संज्ञा होने के बाद उससे पूर्व के इगन्त अङ्ग दी के ईकार को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण एकार आदेश होकर देय बना। तत्पश्चात् प्रातिपदिक संज्ञा तथा तत्सम्बन्धी कार्य होकर देयम् यह रूप सिद्ध हुआ।

पेयम् – पीने के अर्थ में पा पाने धातु है, पा धातु से देयम् की तरह पेयम् बना।

सूत्र – पोरदुपधात् 3/1/98

वृत्ति – पवर्गान्तादुपधाद्यत् स्यात्। ण्यतोऽपवादः।

सूत्रार्थ – पवर्ग (प, फ, ब, भ, म) हो अन्त में और ह्रस्व अकार हो उपधा में जिस धातु के उससे यत् प्रत्यय होता है।

उदाहरण – शप्यम्। लभ्यम्।

व्याख्या – यह प्रत्यय विधायक विधि सूत्र है। इस सूत्र में पोः एवं अदुपधात् दोनों पञ्चमी एकवचन के रूप हैं। यह सूत्र प्राप्त ण्यत् प्रत्यय का अपवाद करता है। ऋहलोर्ण्यत् के अनुसार ऋवर्णान्त एवं व्यञ्जनान्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है। इस प्रकार किसी भी व्यञ्जनान्त धातु से प्राप्त ण्यत् का अपवाद करते हुए यह सूत्र कहता है कि अन्तिम व्यञ्जन यदि पवर्ग का हो और उससे पूर्व (उपधा में) ह्रस्व अकार हो तो यत् प्रत्यय ही होगा।

शप्यम् – शप् धातु हलन्त अर्थात् व्यञ्जनान्त है अतः यहां 'ऋहलोर्ण्यत्' सूत्र से ण्यत् प्रत्यय प्राप्त था। इसका बाध करके इस अपवाद सूत्र 'पोरदुपधात्' से यत् प्रत्यय हुआ। शप्+यत् इस स्थिति में तकार का अनुबन्धलोप तथा कृदन्त होने के कारण प्रातिपदिक संज्ञा एवं नपुंसकलिङ्ग में विभक्ति सम्बन्धी कार्य होकर शप्यम् यह रूप सिद्ध हुआ।

लभ्यम् – लभ् (डुलभष् प्राप्तौ) धातु में अनुबन्धलोप होने के बाद यत् प्रत्यय करके शप्यम् की तरह लभ्यम् बना।

सूत्र – एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् 3/1/109

वृत्ति – एभ्यः क्यप् स्यात्।

सूत्रार्थ – इण्, स्तु, शास्, वृ, दृ और जुष् धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – यह प्रत्यय विधायक विधि सूत्र है। इस सूत्र में एतिस्तुशास्वृदृजुषः यह पञ्चमी एकवचन का पद है। क्यप् यह प्रथमा एकवचन का रूप है। क्यप् प्रत्यय में भी शेष य बचता है। अन्त्य हल् वर्ण का इस संज्ञा और लोप कैसे होता है यह पूर्व में वर्णित है। प्रत्यय के आदि में स्थित क वर्ण की इत् संज्ञा लशक्वतद्धिते 1/3/8 से होती है तथा इत् संज्ञक वर्ण का पूर्ववत् लोप होकर य शेष रहता है।

सूत्र – ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् 6/1/71

सूत्रार्थ – पित् कृत् के परे रहते ह्रस्व वर्ण को तुक् का आगम होता है।

उदाहरण – इत्यः। स्तुत्यः।

व्याख्या – यह आगम विधायक विधि सूत्र है। ह्रस्वस्य यह षष्ठी एकवचन का पद है। पिति एवं कृति ये दोनों सप्तमी एकवचन के पद हैं। तुक् यह प्रथमा एकवचन का रूप है। तुक् में त् शेष रहता है। उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् 1/3/2 इस सूत्र से इत् संज्ञा होती है तथा इत् संज्ञक वर्ण उकार का लोप एवं अन्त्य हल् वर्ण ककार का भी लोप होने से त् शेष बचता है। कित् होने के कारण आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा सूत्र से अन्तावयव होकर तकार बैठेगा।

इत्यः – इण् (इ) धातु का अन्त्य णकार इत्संज्ञक है। अतः इ धातु को अजन्त होने के कारण 'अचो यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय प्राप्त था जिसे बाध कर 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्' इस अपवाद सूत्र से क्यप् प्रत्यय हुआ। इक्यप् इस स्थिति में प्रत्यय का अन्त्य पकार तथा आदि ककार की इत् संज्ञा एवं लोप हुआ। इय इस स्थिति में क्यप् प्रत्यय सम्बन्धी यकार पित् कृत् प्रत्यय है अतः 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से पित् कृत् प्रत्यय परे रहते ह्रस्व वर्ण अर्थात् धातु के इकार को तुक् का आगम हुआ। तुक् में ककार इत् संज्ञक है अतः 'आद्यन्तौ टकितौ' इस परिभाषा सूत्र की सहायता से तुक्+इ धातु का अन्तावयव बना। इ+तुक्+य इस अवस्था में उकार तथा ककार का अनुबन्ध लोप हुआ। इत्य इस स्थिति में वर्ण–सम्मेलन होकर प्रातिपदिक संज्ञा हुई। प्रातिपदिक संज्ञा होने से प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय हुआ तथा तत्सम्बन्धी कार्य होने से इत्यः यह रूप सिद्ध हुआ।

स्तुत्यः – ष्टुञ् स्तुतौ, स्तु धातु से भी इसी तरह क्यप्, तुक्, सु, रूत्वविसर्ग करके स्तुत्यः रूप बनता है।

सूत्र – शास इदङ्हलोः 6/4/34

वृत्ति – शास उपधाया इत्स्यादङि हलादौ क्ङिति।

सूत्रार्थ – अङ् परे रहते अथवा हलादि कित् वा ङित् परे रहते शास् धातु की उपधा के स्थान पर ह्रस्व इकार आदेश होता है।

उदाहरण – शिष्यः। वृत्यः। आदृत्यः। जुष्यः।

व्याख्या – यह आदेश विधायक विधि सूत्र है। शासः यह षष्ठी एकवचन का पद है। इत् यह प्रथमा एकवचन का पद है। अङ्हलोः यह सप्तमी द्विवचन का पद है। शास् धातु हलन्त होने के कारण ण्यत् प्रत्यय प्राप्त था जिसे बाध कर उसका अपवाद सूत्र 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्' से क्यप् प्रत्यय हुआ।

शिष्यः – शास् धातु से 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्' से क्यप् प्रत्यय होता है। अब शास्+क्यप् इस स्थिति में प्रत्ययस्थ ककार तथा पकार का अनुबन्धलोप हुआ। पुनः शास्+य इस स्थिति में प्रत्यय का शेष बचा भाग यकार हलादि कित् प्रत्यय है अतः 'शास इदङ्हलोः' सूत्र से हलादि कित् अर्थात् क्यप् प्रत्यय सम्बन्धी यकार परे रहते शास् के उपधा में स्थित आकार के स्थान पर इकार आदेश हुआ। श्+इ+स्+य इस स्थिति में वर्ण–सम्मेलन होकर शिस्य बना। 'शासिवसिघसीनां च' सूत्र से इकार से परे दन्त्य सकार को मूर्धन्य षकार आदेश होकर शिष्य बना। तत्पश्चात् कृदन्त होने से प्रातिपदिक संज्ञा एवं प्रातिपदिक होने से विभक्ति उत्पत्ति तथा तत्सम्बन्धी कार्य होकर शिष्यः यह रूप सिद्ध हुआ।

वृ से क्यप् और तुक् करके वृत्यः, आ पूर्वक 'दृ' से आदृत्यः बना। जुष् से क्यप् होकर जुष्यः बनता है।

सूत्र – मृजेर्विभाषा 3/1/113

वृत्ति – मृजेः क्यब्वा।

सूत्रार्थ – मृज् धातु से क्यप् प्रत्यय विकल्प से होता है।

उदाहरण – मृज्यः।

व्याख्या – यह प्रत्यय विधायक विधि सूत्र है। मृजेः यह पञ्चमी एकवचन का पद है। विभाषा यह प्रथमा एकवचन का पद है। क्यप् में ककार तथा पकार का अनुबन्ध लोप होने पर य शेष रहता है। कित् होने के कारण क्ङिति च से लघूपधगुण नहीं होता है।

मृज्यः – मृज् धातु से परे 'मृजेर्विभाषा' सूत्र से क्यप् प्रत्यय विकल्प से हुआ। मृज्+क्यप् इस स्थिति में अनुबन्ध लोप तथा विभक्ति सम्बन्धी अन्य कार्य होकर मृज्यः यह रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – ऋहलोर्ण्यत् 3/1/124

वृत्ति – ऋवर्णान्ताद्धलन्ताच्च धातोर्ण्यत्।

सूत्रार्थ – ऋवर्ण हो जिनके अन्त में तथा व्यञ्जनवर्ण (हल् वर्ण) हो जिनके अन्त में ऐसे धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है।

उदाहरण – कार्यम्। हार्यम्। धार्यम्।

व्याख्या – यह प्रत्यय विधायक विधि सूत्र है। ऋहलोः यह पञ्चमी के अर्थ में षष्ठी एकवचन का पद है। ण्यत् यह प्रथमा एकवचन का पद है। ण्यत् प्रत्यय में भी यकार ही शेष रहता है। अन्त्य तकार की इत् संज्ञा एवं लोप पूर्ववत् समझना चाहिए। आदि मे स्थित ण् की इत् संज्ञा चुटु 1/3/7 इस सूत्र से हुई। तत्पश्चात् इत्संज्ञक णकार का लोप होने से य शेष बचा।

कार्यम् – कृ धातु के ऋवर्णान्त होने के कारण 'ऋहलोर्ण्यत्' सूत्र से ण्यत् प्रत्यय हुआ। कृ +ण्यत् इस अवस्था में प्रत्ययस्थ णकार एवं तकार का अनुबन्धलोप हुआ। कृ+य इस स्थिति में प्रत्यय के यकार के णित् होने के कारण 'अचो ञ्णिति' सूत्र से णित् प्रत्यय परे रहते अजन्त अङ्ग सम्बन्धी कृ के ऋकार को वृद्धि 'उरण रपरः' सूत्र की सहायता से रपर होकर आर् हुई। क्+आर्+य इस स्थिति में वर्ण–सम्मेलन होकर कार्य बना। तत्पश्चात् प्रातिपदिक संज्ञा, सु विभक्ति, अमादेश, पूर्वरूप एकादेश एकादेश होकर कार्यम् यह रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – चजोः कु घिण्यतोः 7/3/52

वृत्ति – चजोः कुत्वं स्याद् घिति ण्यति च परे।

सूत्रार्थ – घित् अथवा ण्यत् प्रत्यय परे रहते चकार और जकार के स्थान पर कवर्ग (क और ग) आदेश होता है।

व्याख्या – यह आदेश विधायक विधि सूत्र है। चजोः यह षष्ठी एकवचन का पद है। कु यह प्रथमा एकवचन का पद है। घिण्ण्यतोः यह सप्तमी द्विवचन का रूप है।

सूत्र – मृजेर्वृद्धिः 7/2/114

वृत्ति – मृजेरिको वृद्धिः सार्वधातुकार्धधातुकयोः।

सूत्रार्थ – सार्वधातुक और आर्धधातुक प्रत्यय परे रहते मृज् धातु के इक् (ऋ) को वृद्धि होती है।

उदाहरण – मार्ग्यः।

व्याख्या – यह आदेश विधायक विधि सूत्र है। इस सूत्र में मृजेः यह षष्ठी एकवचन का पद है। वृद्धिः यह प्रथमा एकवचन का पद है।

सार्वधातुक संज्ञा – धातु से विहित होने वाले प्रत्ययों की (1) सार्वधातुक अथवा (2) आर्धधातुक इन दोनों में से कोई एक संज्ञा अवश्य होती है और इन संज्ञाओं का कुछ विशेष फल भी होता है।

(१) तिङ्–शित्–सार्वधातुकम् 3/4/003 इस सूत्र से धातु से विहित तिङ् (तिप् तसादि 18 प्रत्यय) और शित् (शकार की इत् संज्ञा हुई हो जिन प्रत्ययों में) प्रत्यय सार्वधातुक संज्ञक होते हैं।

(२) आर्धधातुकं शेषः 3/4/14 सूत्र के द्वारा धातु से विहित होने वाले तथा तिङ् और शित् से भिन्न जो प्रत्यय उनकी आर्धधातुक संज्ञा होती है।

यह पूर्व में ही स्पष्ट हो चुका है कि कृत् प्रत्यय वे प्रत्यय हैं जो धातु से विहित तो होते हैं परन्तु तिङ् से भिन्न ही होते हैं। अतः कृदन्तप्रकरण में जो कृत् प्रत्यय शित् हैं उनकी सार्वधातुक संज्ञा तथा उससे अतिरिक्त अन्य सभी प्रत्ययों की आर्धधातुक संज्ञा होती है।

मार्ग्यः – 'मृजेर्विभाषा' सूत्र के द्वारा मृज् धातु से परे जब पक्ष में क्यप् प्रत्यय नहीं होगा तो उस पक्ष में हलन्त धातु होने के कारण 'ऋहलोर्ण्यत्' सूत्र से ण्यत् प्रत्यय हुआ। मृज्+ण्यत् इस अवस्था में णकार का अनुबन्धलोप हुआ तथा धातु से विहित तथा तिङ् व शित् से भिन्न प्रत्यय होने के कारण उसकी आर्धधातुक संज्ञा भी हुई। मृज़्य इस स्थिति में 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' सूत्र से ण्यत् प्रत्यय के परे रहते जकार के स्थान में कवर्ग का सदृशतम वर्ण गकार हुआ। मृग्य इस अवस्था में 'उरण रपरः' सूत्र की सहायता से 'मृजेर्वृद्धिः' सूत्र से मृग् के ऋकार को वृद्धि आर् हुई। म्+आर्+ग्+य इस स्थिति में वर्ण–सम्मेलन होकर मार्ग्य बना। तत्पश्चात् प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्ति सम्बन्धी कार्य होने से मार्ग्यः यह रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – भक्ष्ये 7/3/69

वृत्ति – भोग्यमन्यत्।

सूत्रार्थ – भक्ष्य (खाने योग्य) अर्थ में भुज् धातु से भोज्य इस शब्द का निपातन होता है।

उदाहरण – भोज्यम्

व्याख्या – यह निपातनात्मक विधि सूत्र है। इस सूत्र में भोज्यं यह प्रथमा एकवचन का पद है। भक्ष्ये यह सप्तमी एकवचन का पद है।

23.4 सारांश

कृदन्त के अन्तर्गत आने वाले कृत्य प्रकरण नामक इस इकाई में हमने 'तव्य, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर, यत्, क्यप् और ण्यत्' इन सात प्रत्ययों का अध्ययन किया। ये सातों प्रत्यय कृदतिङ् इस अधिकार में पढ़े जाने के कारण कृत् संज्ञक कहलाते हैं। पुनः कृत्याः के अधिकार में भी पढ़े जाने से कृत्य संज्ञक भी हो जाते हैं। इस प्रकार इन प्रत्ययों की कृत् एवं कृत्य दोनों ही संज्ञाएँ स्वीकार की गयीं हैं। इन प्रत्ययों का कर्तरि कृत् सूत्र द्वारा कर्ता अर्थ में विधान प्राप्त होने पर तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः इस अपवाद सूत्र के द्वारा भाव और कर्म अर्थ में विधान किया जाता है। अतः कृत्य प्रत्यय कर्ता अर्थ में न होकर भाव और कर्म अर्थ में ही विहित दिखाई देते हैं।

इस इकाई में हमने यह भी देखा कि पाणिनीय परम्परा में जहाँ सामान्यतया उत्सर्ग का अपवाद नित्य बाधक हुआ करता है वहीं इस प्रकरण में पढ़े गये वाऽसरूप विधि (वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्) के सामर्थ्य से धातोः इस अधिकार में विधीयमान तथा स्त्रियां क्तिन् सूत्र से विहित स्त्र्यधिकार को छोड़कर असरूप अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग प्रत्यय के विकल्प से बाधक हुआ करते हैं। सरूप अपवाद प्रत्यय तो उत्सर्ग का नित्य ही बाध करते हैं – इस पर्यालोचन से यह परोक्ष अर्थ भी स्पष्टतया प्राप्त होता है। संक्षेप में वाऽसरूप विधि को इन वाक्यों द्वारा सरलता से समझा जा सकता है : (1) धातोः (3/1/91 से तृतीय अध्याय की समाप्ति पर्यन्त) के इस अधिकार में असरूप अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग प्रत्यय के विकल्प से बाधक होते हैं। (2) परन्तु इसी अधिकार में सरूप अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग के नित्य ही बाधक होते हैं। (3) स्त्रियां क्तिन् के अधिकार में तो असरूप अपवाद प्रत्यय भी उत्सर्ग प्रत्यय के नित्य बाधक होते हैं।

इसके उपरान्त हमने तव्यत्तव्यानीयरः सूत्र के माध्यम से तव्यत्, तव्य और अनीयर् इन तीन प्रत्ययों तथा केलिमर् उपसंख्यानम् इस वार्तिक के द्वारा विहित केलिमर् प्रत्यय के विधान का सोदाहरण अध्ययन किया। तत्पश्चात् कृत्यल्युटो बहुलम् सूत्र के द्वारा बहुल के चार प्रकारों को समझने के बाद अन्त में अचो यत् सूत्र के द्वारा यत्, एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् सूत्र के द्वारा क्यप् तथा ऋहलोर्ण्यत् सूत्र के द्वारा ण्यत् प्रत्यय का सम्यक् प्रकार से अध्ययन किया।

23.5 शब्दावली

कृत्य – यह कृत्य संज्ञा कृत्दृप्रकरण के अन्तर्गत आने वाले सात प्रत्यय–विशेषों की एक अवान्तर (कृत् के अन्तर्गत कृत्य) संज्ञा है। इस संज्ञा के अन्तर्गत 'तव्य, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप् और ण्यत्' प्रत्यय आते हैं। इन सात प्रत्ययों का एक कारिका में किया गया परिगणन अधोलिखित है –

तव्यञ्च तव्यतञ्चानीयरं केलिमरं तथा।
यतं ण्यतं क्यपं चौव सप्त कृत्यान् प्रचक्षते ।।

बहुल – क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।।

अर्थात् – सूत्रों के विधान को भिन्न–भिन्न प्रकार वाला समझ कर वैयाकरण 'बहुल' के चार प्रकार कहते हैं: (1) कहीं प्रवृत्त हो जाना, (2) कहीं प्रवृत्त न होना, (3) कहीं विकल्प से प्रवृत्त होना, (4) और कहीं कुछ और ही हो जाना। कुछ और होने का तात्पर्य यह है कि निर्धारित योग्यता के अतिरिक्त भी कुछ और ही विधान होता है।

कु – अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः के विधान से उदित् होने के कारण 'कु' से कवर्ग (क, ख, ग, घ, ङ) का बोध होता है।

वृद्धि – 'वृद्धिरादैच्' सूत्र से आ, ऐ और औ की वृद्धि संज्ञा होती है।

हल् – यह एक प्रत्याहार है, जिसके अन्तर्गत सभी व्यञ्जन वर्ण आते हैं।

उपधा – 'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा' अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

23.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. वरदराजाचार्य, मूल लघुसिद्धान्तकौमुदी. गोरखपुरः गीताप्रेस।
2. वरदराजाचार्य, हिन्दी व्याख्या गोविन्दाचार्य. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्लीः चौखम्भा सुरभारती।
3. वरदराजाचार्य, हिन्दी व्याख्या शास्त्री, धरानन्द. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्लीः मोतीलाल बनारसी दास।
4. वरदराजाचार्य, हिन्दी व्याख्या शास्त्री, भीमसेन. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भाग–1–6), दिल्लीः भैमी प्रकाशन।
5. शास्त्री, चारुदेव. व्याकरण चन्द्रोदय. (भाग–1–3), दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।
6. वरदराजाचार्य, सम्पा० एवं हिन्दी सिंह, सत्यपाल. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्लीः शिवालिक पब्लिकेशन
7. Apte, V.S. The Students, Guide to Sanskrit Composition, Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.
8. Kale, M.R. Higher Sanskrit Grammar, MLBD, Delhi.
9. Kanshi Ram, Laghusiddhantkaumudi (Vol- 1&3), MLBD-Delhi, 2009.
10. Ballantyne, James R. Laghusiddhantkaumudi, Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.

23.7 अभ्यास प्रश्न

1. तिङन्त और कृदन्त पदों में परस्पर अन्तर बताइये।

2. किन्हीं 10 धातुओं के साथ तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग करके पदों का निर्माण कीजिए।
3. वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् और कृत्यल्युटो बहुलम् इन दो सूत्रों की व्याख्या करें।
4. ऋहलोर्ण्यत् और अचो यत् के परस्पर बाध्यबाधक भाव को स्पष्ट करें।
5. कृत्यसंज्ञक प्रत्यय कितने और कौन–कौन से हैं।
6. कृत्य प्रत्यय किन–किन अर्थों में होते हैं? कतिपय उदाहरणों के द्वारा बताइये।
7. कृत्य प्रत्ययान्तों की प्रातिपदिक संज्ञा किस सूत्र से होती है?
8. निम्नलिखित पदों की सूत्र प्रदर्शन पूर्वक सिद्धि करें –

   एधितव्यम्। चयनीयः। दानीयः। स्नानीयम्। चेयम्। लभ्यम्। इत्यः। शिष्यः। कार्यम्।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY